मलसॉमा

खॉलकुंगी

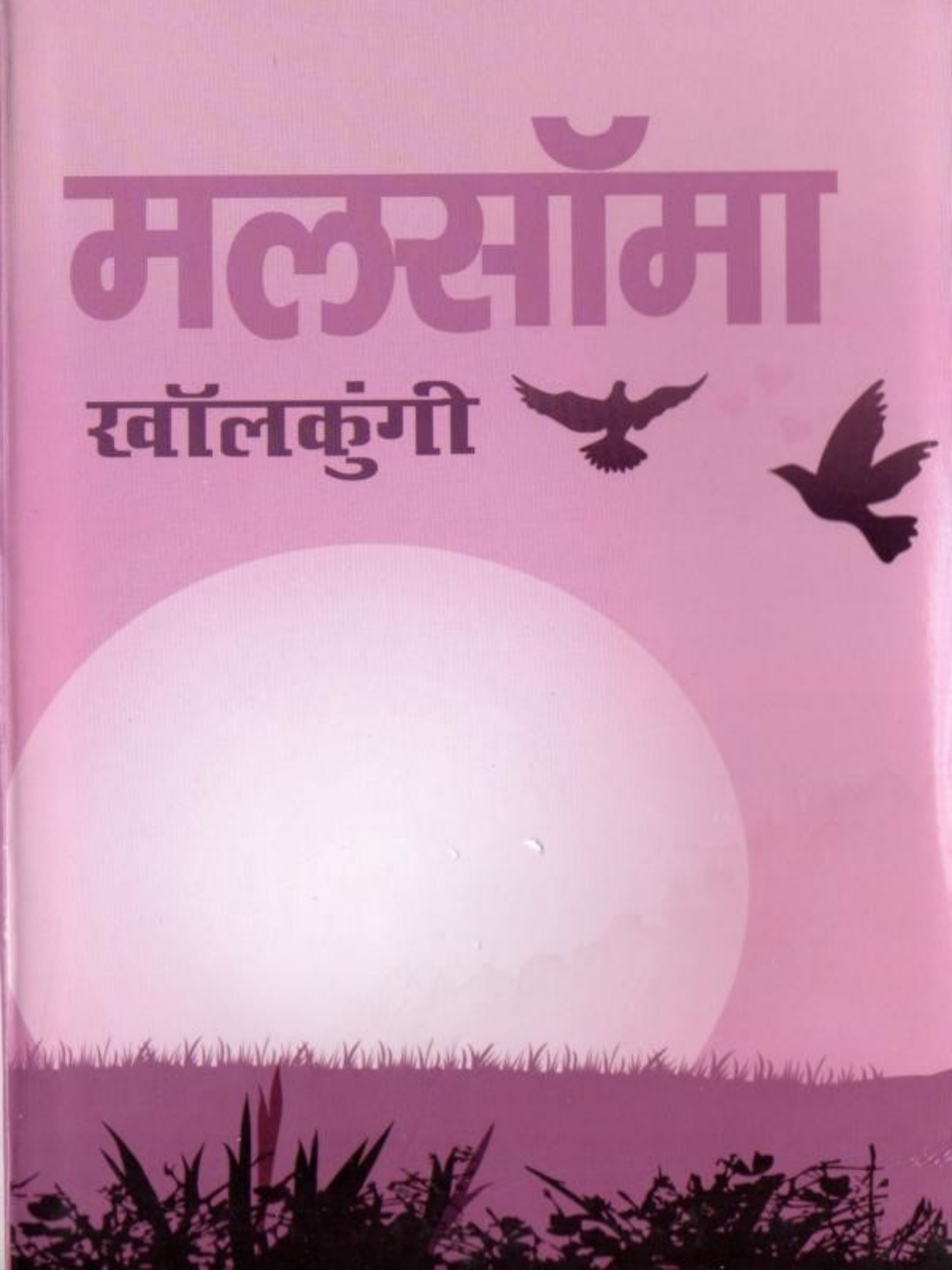

मलसॉमा

[मिज़ो प्रेम-कथा पर आधारित उपन्यास]

मलसॉमा

खॉलकुंगी

प्राक्कथन

ज़ॉलपाला की क़ब्र के सामने
खिले हैं कोरल के फूल ख़ूब सुंदर
सामने हैं मिथुन के कपाल
मेरा प्यारा ज़ॉलपाला!

1940 के अंत में, दिसंबर में ज़ॉलपाला की क़ब्र वाली पहाड़ी पर गिने-चुने कोरल के पेड़ थे। इस पहाड़ी के नीचे की तरफ़ फुलपुई गाँव था, यहाँ घरों में लॉन नहीं थे। यह गाँव पहाड़ी की ढलान पर बसा था।

गर्मियों में जब मानसूनी बरसात होने लगती थी, तो गाँव वाले लुंगसुम (चट्टान के बीच स्थित पर्याप्त पानी भरा टोकर) से पानी निकालकर इस्तेमाल करते थे। किंतु सर्दियों और शुष्क मौसम में मानसूनी बरसात के आने से पहले तक लोगों को दूर के झरने से सारा दिन और सारी रात पानी लाना पड़ता था, जिसके लिए वे अपनी बारी की प्रतीक्षा करते रहते थे।

यह कहानी एक धर्मपरायण लड़की की है, जिसका जन्म और पालन फुलपुई में हुआ था। वह पाप से दूषित नहीं हुई थी।

यह कहानी प्रतीक्षा कर रही है कि आप इसे पढ़कर आनंद प्राप्त करें। उसके पिता का पुत्री के लिए संदेश कुछ इस प्रकार था—"अपने सौंदर्य, भोलेपन और शुचिता को, लड़कों के चापलूसी भरे शब्दों से कलुषित मत होने देना। याद रखो, जो इन प्रलोभनों से अपनी रक्षा नहीं कर सकते, उन्हें जीवन में पूर्ण संतोष कभी प्राप्त नहीं होता।"

वर्ष 1977 में एक ईसाई प्रेम-कहानी लेखन की प्रतियोगिता हुई। तब मैंने एक कहानी लिखने का विचार किया। मुझे देर से सूचना मिली थी, इसलिए बहुत सा समय व्यर्थ निकल गया। एक साल के अंदर कहानी पूरी करने के लिए मैंने पूरी शक्ति से जतन किया। सीमित समय में मैंने कहानी लिखने और पांडुलिपि को टंकित करने का काम पूरा कर लिया।

31 अक्तूबर, 1977 को कहानी जमा करने की आख़िरी तारीख़ थी, मैंने समय पर रचना जमा कर दी।

कहानी सचमुच नई थी। वह किसी चरित्र या कहानी पर आधारित नहीं थी। सौभाग्य से कहानी को प्रतियोगिता में सर्वोत्तम माना गया। इससे मुझे बहुत ख़ुशी हुई।

—खॉलकुंगी

पिता नहीं रहे

दिसंबर, 1940 का 'पॉल्तलक थ्ला' (Pawltlak thla) का महीना जब फ़सलों की कटाई पूरी हो जाती है। पृथ्वी अपने अक्ष पर झुक चुकी थी और सर्दी का मौसम शुरू हो चुका था। पृथ्वी के इस झुकाव के कारण सूर्य की किरणों में गरमी के मौसम का तीखापन नहीं रह गया था। जाड़े की शुरुआत हो जाने से एक बरस के छोटे पौधों की पि त्तयाँ भी पीली पड़ गई थीं।

इस बार झूम गाँव के पास था। फ़सल अच्छी हुई थी, गाँव के सभी लोग ख़ुश थे। कटाई का समय होने के बावजूद कई परिवार फ़सलें काट नहीं पाए थे। गाँव के कुछ 'थाक्लो' परिवारों, जिनमें दो या दो से अधिक कमाने वाले होते हैं, के पास बड़े-बड़े 'झूम' थे लेकिन 'पहमेई' (Pahmei) परिवारों, जिनमें केवल पिता ही कमाने वाला होता है, के झूम छोटे थे। कुछ ऐसे भी परिवार थे, जिन्होंने अपनी फ़सल काटने का काम पूरा कर लिया था। वे बैको घाटी में झूम के लिए अपनी पसंद के स्थान में अगले साल की फ़सल हेतु क्षेत्र की खोज कर रहे थे। कुछ 'पहमेई' जिन्होंने पुलिया से दाना अलग करना अभी आरंभ किया था, खलिहान तैयार कर रहे थे। इस समय छोटे बच्चे तक काम में बड़ों की मदद करते हैं। पूरा परिवार झूम में दिन-रात तब तक बना रहता था, जब तक पूरी फ़सल कट नहीं जाती थी। केवल छोटे बच्चे और बूढ़े, जो श्रम के योग्य नहीं थे, वे ही घर में रहते थे। बुधवार के दिन मिस वनलाल रेमी, जिसे अपनी फ़सल की कटाई पूरी करने के लिए कुछ और समय की दरकार थी, झूम जाने की तैयारी कर रही थी कि उसकी फुफेरी बहन ल्लुअंगी (Tluangi) भी उसकी मदद के लिए आ पहुँची। जैसे ही वह घर से निकलने लगी कि एल्डर हुआइया (Elder Huaia) की पत्नी मिलने आईं।

वे बोलीं—"रेमी (Remi) के पिता, इस सुबह आप कैसा महसूस कर रहे हैं?"

"अरे मिसेज़ चिंगी (Chhingi), मुझे कोई ख़ास दर्द नहीं है। मैं ठीक-ठाक ही महसूस कर रहा हूँ।" रेमी के पिता लियाना ने कहा।

"डैडी, मैं झूम जाने की तैयारी कर रही हूँ। मेरी कज़िन ल्लुअंगी भी मेरी सहायता के लिए आ गई है। इसलिए आज हम अपना काम पूरा कर लेंगे। डैडी, ठीक होगा

न?" रेमी बोली।

"बेबी, मेरे बारे में ज़्यादा परेशान मत हो। अगर आज फ़सल पूरी कट जाए तो बहुत अच्छा होगा।" लियाना ने कहा।

मिसेज़ चिंगी बोलीं—"जाओ, यहाँ अगर कुछ करना हुआ तो मैं तुम्हारे पिता की मदद के लिए हूँ। चिंता मत करो। मिस्टर लियाना, वैसे भी सियालसुक (पुरोहिताश्रम) के प्रतिनिधि आज रात अपनी रिपोर्ट देने यहाँ आ रहे हैं। अच्छा होगा कि आप उनकी रिपोर्ट सुनने चर्च में पधारें।"

मिस्टर लियाना बोले—"हाँ, मैं चर्च जाना चाहता हूँ। लेकिन मैं दिन पर दिन कमज़ोर होता जा रहा हूँ। मेरा स्वास्थ्य मुझे चर्च जाने की इजाज़त नहीं देता। मुझे कोई विशेष दर्द नहीं है, लेकिन कमज़ोरी बहुत लग रही है। ईश्वर की कृपा से मैं ठीक हो जाऊँगा। ईश्वर मुझे अगले साल प्रेज़बिटरी (Presbytery) में हिस्सा लेने की इजाज़त देगा।"

मिसेज़ चिंगी ने कहा—"मुझे विश्वास है कि अब आप बेहतर हैं। मुझे कुछ छोटे-मोटे काम हैं, इसलिए कुछ समय के लिए मैं आपसे विदा लेती हूँ। सुअर के भोजन के लिए मुझे कुछ पत्तियाँ बटोरनी हैं।" वे चली गईं।

रेमी भी अपनी फुफेरी बहन त्लुअंगी के साथ झूम के लिए निकल पड़ी। गाँव में प्रवेश के रास्ते पर कंधे पर दुनाली बंदूक़ लिए ललमुअना आए। त्लुअंगी ने उनसे पूछा—"किधर चल दिए?"

उनके चेहरे से लग रहा था कि वे नशे में थे।

उन्होंने कहा—"पिछली रात बनैले सुअरों के एक झुंड ने मेरे झूम पर हमला किया था। मैं उनका शिकार करूँगा।" वे रेमी के ठीक पीछे चल रहे थे। उनके मुँह से आने वाली शराब की गंध उसे घिनौनी लग रही थी।

रेमी ने उनसे कहा—"आप तेज़ी से चल रहे हैं, हमारी चाल धीमी है, हमसे आगे चले जाइए न।"

वे बोले—"नहीं, मैं तुम्हारे साथ चलना चाहता हूँ। चूँकि तुम्हारे पिता चर्च के आदमी हैं, किसी और वक़्त तुम्हारे घर आकर तुमसे दोस्ती करने की हिम्मत नहीं कर सकता। आज इस मौक़े का लाभ उठाने दो।"

वे वहाँ तक उसके साथ चलते रहे जहाँ से एक रास्ता रेमी के झूम की ओर मुड़ता था। रास्ते से गायब होने से पहले उन्होंने कहा—"अगर तुम मुझसे पहले घर पहुँच जाओ, तो प्लीज़ एक खीरा रखकर छॉलथूआई (यह बताने के लिए कि व्यक्ति घर पहुँच गया है, कोई चिह्न बाहर रखने की प्रथा) कर लेना।